

डॉ. डैनियल के. डार्को, लूका रचित सुसमाचार, सत्र 22, पश्चात्ताप के लिए भविष्यवाणी का आह्वान, लूका 13

© 2024 डैन डार्को और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. डैनियल के. डार्को द्वारा लूका के सुसमाचार पर दिए गए उनके उपदेश हैं। यह 22, पश्चात्ताप के लिए भविष्यवाणी का आह्वान, लूका 13 है।

बाइबिल ई-लर्निंग व्याख्यान श्रृंखला में लूका के सुसमाचार व्याख्यान में आपका स्वागत है।

यहाँ हम लूका अध्याय 13 से यीशु की शिक्षाओं पर आगे बढ़ते हैं। लूका 13 में, सामग्री यीशु की शिक्षा के ठीक बाद जारी रहती है जिसे मैंने निर्णय के लिए आह्वान कहा है; यदि आपको याद हो, तो शिष्यत्व के लिए यीशु का आह्वान जिसके लिए वफ़ादारी की आवश्यकता होगी, लोगों के शिष्यत्व को किस तरह से देखते हैं, इस पर निर्भर करते हुए रिश्तों को भी प्रभावित कर सकता है। यहाँ, वह उस चीज़ में बदल जाता है जिसे मैंने पश्चात्ताप के लिए एक भविष्यसूचक आह्वान कहा है, जिसमें लूका टिमोथी जॉनसन की कुछ भाषा उधार ली गई है, जो यीशु को एक भविष्यवक्ता के रूप में चित्रित करता है जो भविष्यसूचक भविष्यवाणियाँ घोषित कर रहा है।

पश्चात्ताप के लिए भविष्यवाणी के आह्वान में, मैंने अध्याय 13:1 से 17 तक पढ़ा, और इस विशेष घंटे या इस विशेष व्याख्यान में, हम अध्याय 13 को यथासंभव व्यापक अर्थ में कवर करने का प्रयास करने जा रहे हैं। उसी समय कुछ लोग मौजूद थे जिन्होंने उसे उन गलीलियों के बारे में बताया जिनका खून पिलातुस ने उनके बलिदानों के साथ मिला दिया था। और उसने उन्हें उत्तर दिया, क्या तुम सोचते हो कि ये गलीली अन्य सभी गलीलियों से अधिक पापी थे क्योंकि उन्होंने इस तरह से कष्ट सहे? नहीं, मैं तुमसे कहता हूँ, लेकिन जब तक तुम पश्चात्ताप नहीं करोगे, तुम सब भी इसी तरह नाश हो जाओगे।

या फिर क्या तुम समझते हो कि वे अठारह लोग जो शिलोह के गुम्मत पर गिरकर मर गए, यरूशलेम के अन्य सभी लोगों से अधिक अपराधी थे? नहीं, मैं तुमसे कहता हूँ, लेकिन यदि तुम पश्चात्ताप नहीं करोगे, तो तुम सब भी इसी तरह नाश हो जाओगे। और उसने यह दृष्टान्त कहा: एक आदमी ने अपने अंगूर के बगीचे में एक अंजीर का पेड़ लगाया था, और वह उस पर फल ढूँढ़ने आया, लेकिन उसे कोई फल नहीं मिला। और उसने अंगूर के रखवाले से कहा, देख, मैं तीन साल से इस अंजीर के पेड़ पर फल ढूँढ़ने आया हूँ, लेकिन मुझे कोई फल नहीं मिलता।

इसे काट डालो। यह ज़मीन क्यों खाएगा? और उसने उससे कहा, "श्रीमान्, इसे इस साल भी रहने दो जब तक कि मैं इसके चारों ओर खुदाई करके इसे उपजाऊ न बना दूँ। फिर, अगर यह अगले साल फल दे, तो ठीक है, लेकिन अगर नहीं, तो तुम इसे काट सकते हो।"

वह उस उपनगर के एक आराधनालय में उपदेश कर रहा था, और देखो, वहाँ एक स्त्री थी, जिसे अठारह वर्ष से एक दुष्टात्मा लगी हुई थी। वह झुकी हुई थी और सीधी नहीं हो सकती थी। जब

यीशु ने उसे देखा, तो उसे बुलाया और उससे कहा, “हे स्त्री, तू अपनी दुर्बलता से मुक्त हो गई है।”

और उस ने उस पर हाथ रखे, और वह तुरन्त सीधी हो गई, और परमेश्वर की महिमा करने लगी। परन्तु आराधनालय का सरदार इस बात से क्रोधित हुआ कि यीशु ने उपनगर में उसे चंगा किया था, और लोगों से कहने लगा, “सप्ताह में छः दिन हैं, अर्थात् छः दिन जिनमें काम-काज किया जाना चाहिए। उन्हीं दिनों में आकर चंगे हो जाओ, न कि उपनगर में।”

तब प्रभु ने उसको उत्तर दिया, कि हे कपटियों, क्या तुम में से हर एक अपने बैल को चरनी से खोलकर पानी पिलाने के लिये नहीं ले जाता? या क्या यह स्त्री जो इब्राहीम की बेटी है, जिसे शैतान ने अठारह वर्ष से बान्ध रखा था, इस बांझपन से छुड़ाना उचित न था? जब उसने ये बातें कहीं, तो उसके सब विरोधी लज्जित हो गए, और सब लोग उसके सब महिमामय कामों से जो उसने किए थे, आनन्दित हुए। पद 18. इसलिये यीशु ने कहा, परमेश्वर का राज्य किसके समान है? और मैं उसकी तुलना किससे करूँ? यह उत्तम बीज के दाने के समान है, जिसे किसी मनुष्य ने लेकर अपने बगीचे में बोया, और वह बढ़कर पेड़ हो गया, और आकाश के पक्षियों ने उसकी डालियों में घोंसले बनाए।

और फिर, उसने कहा, मैं परमेश्वर के राज्य की तुलना किससे करूँ? यह खमीर के समान है जिसे एक स्त्री ने लेकर पेड़ पर छिपा दिया और आटे के सेर भर आटे को खमीर बना दिया। यीशु की सेवकाई में पश्चाताप के लिए भविष्यवाणी के आह्वान में कुछ बातें उजागर करने योग्य हैं। सबसे पहले, आइए काल को स्पष्ट करें।

पश्चाताप शब्द का क्या अर्थ है, और मुझे इसे ल्यूक टिमोथी जॉनसन की भाषा में एक भविष्यसूचक आह्वान क्यों मानना चाहिए? सबसे पहले, भविष्यसूचक आह्वान में, लोगों को पश्चाताप करने या नष्ट होने के लिए बुलाना भविष्यद्वक्ताओं की परंपरा है, जैसा कि हम देखते हैं कि मैंने जो पैराग्राफ पढ़ा है उसके शुरुआती हिस्से में इसकी प्रतिध्वनि है। लोगों को परमेश्वर की इच्छा को सुनकर पश्चाताप करना चाहिए। परमेश्वर का वचन।

परिवर्तन के लिए परमेश्वर का आह्वान। भविष्यवाणी की भाषा में, अंत में हमेशा कुछ न कुछ अवश्य होता है। यदि आप पश्चाताप नहीं करते, तो यह परिणाम सामने आएगा।

यही बात हम इस अंश में पाते हैं। इस अंश को थोड़ा और करीब से देखने से पहले मैं जो आखिरी बात स्पष्ट करना चाहता हूँ, वह है पश्चाताप शब्द। पश्चाताप शब्द भविष्यवाणी संबंधी प्रवचनों के साथ-साथ यीशु की शिक्षाओं में भी बहुत महत्वपूर्ण शब्द है।

पश्चाताप करना यह कहने का सरल तरीका नहीं है कि मैं बस धर्म परिवर्तन कर लेता हूँ या मैं बदल जाता हूँ और उस रास्ते पर चला जाता हूँ। पश्चाताप के कई पहलू हैं। पश्चाताप का मूल रूप से मतलब है कि मैं इस विश्वास या इस दृढ़ विश्वास पर कायम रहता हूँ, और मैं एक ऐसा आमूलचूल परिवर्तन करता हूँ जो न केवल संज्ञानात्मक है बल्कि इच्छाशक्ति का भी परिवर्तन है।

और यह इच्छा-परिवर्तन वास्तव में अपराध-बोध की भावना से प्रेरित हो सकता है जो कहता है कि मैंने जो किया वह गलत था। मैंने अपनी इच्छा-परिवर्तन कर लिया। यह यहीं समाप्त नहीं होता।

पश्चात्ताप के लिए लोगों के जीवन जीने के तरीके में भी बदलाव की आवश्यकता होती है। इसलिए यह केवल संज्ञानात्मक गतिविधि ही नहीं है जो किसी व्यक्ति की किसी मुद्दे या इच्छा के बारे में महसूस करने के तरीके को बदलती है, बल्कि यह वास्तविक आचरण में भी तब्दील हो जाती है। इसलिए, जो व्यक्ति पश्चात्ताप करता है, वह अपने जीवन जीने के तरीके को बदल देता है।

ध्यान दें कि मैंने सिर्फ़ व्यवहार में बदलाव की बात नहीं की। उनकी मानसिकता में बदलाव होता है। उनके जीवन के प्रति उद्देश्य और स्वभाव में बदलाव होता है, और परिणामस्वरूप, यह उनके आचरण को प्रभावित करता है।

यीशु यहाँ भविष्यवाणी के लहजे में पश्चात्ताप करने के लिए कहते हैं, लोगों को यह सुनने के लिए बुलाते हैं कि राज्य क्या है और राज्य के शब्दों पर ध्यान देने की आवश्यकता है। यहाँ, हमें कुछ शुरुआती संकेत मिलते हैं जो यीशु को ध्वनि के माध्यम से इसके बारे में बात करने के लिए प्रेरित करेंगे। यीशु ने अपने श्रोताओं के लिए ध्यान देने और ध्यान देने के लिए एक उदाहरण के रूप में दो मामले स्थापित किए।

यीशु ने उन्हें दो घटनाओं की याद दिलाने में बहुत खास भूमिका निभाई है, जिनके बारे में हमारे पास अतिरिक्त जानकारी नहीं है। उन्होंने पिलातुस के साथ हुई उन घटनाओं में से एक का उल्लेख किया। मैं आपको यह बताना चाहता हूँ कि ल्यूक द्वारा पिलातुस का उल्लेख संयोग नहीं हो सकता है, क्योंकि वह गैलीलियों से जुड़े न्याय के बारे में बात करता है। क्या आप अनुमान लगा सकते हैं कि गैलीलियन कौन है? यीशु।

गैलीलियन और कौन हैं? यीशु के शिष्य। और ये गैलीलियन कहाँ जा रहे हैं? वे यरूशलेम जा रहे हैं। लूका की कहानी में, यरूशलेम वह जगह है जहाँ पिलातुस यीशु की मृत्युदंड का अंतिम निर्णय लेगा।

इसलिए, लूका हमें एक परंपरा के बारे में याद दिलाता है जिसमें कुछ गैलीलियन शामिल थे, और कुछ पिलातुस परंपरा में शामिल थे। लेकिन हम इस तथ्य से अनजान नहीं होना चाहते कि लूका के उपयोग, लूका एक बहुत ही कुशल वक्ता और कुशल लेखक है। इसलिए गैलीलियन और पिलातुस का उनका उल्लेख कुछ ऐसी चीजों को प्रतिध्वनित करता है जो तब तक होने वाली हैं जब तक हम पैशन वीक तक नहीं पहुंच जाते।

उन्होंने सिलोम के टॉवर में मारे गए लगभग 18 लोगों का भी उल्लेख किया, लोगों को याद दिलाते हुए कि जब लोग गलत काम करते थे, तो क्या उन्हें उसके परिणाम नहीं भुगतने पड़ते थे? हाँ, उन्हें भुगतने पड़ते थे। अगर ऐसा है, तो क्या उन्हें एक मिनट के लिए भी यह सोचना चाहिए कि अगर वे पश्चात्ताप नहीं करते हैं तो वे अपने व्यवहार के परिणामों से बच जाएँगे? देखिए, मैंने आपको पिछले व्याख्यान में बताया था कि यीशु शिष्यत्व के लिए यह कठोर आह्वान कर रहे थे। यहाँ, वे भविष्यवाणी के लहजे में आते हैं और विशेष रूप से पश्चात्ताप करने का आह्वान करते हैं।

मैं सुझाव देना चाहूँगा कि जीत का दृष्टांत श्रोताओं को इस तरह से बताना चाहिए कि वह बहुत दिलचस्प हो। अब, हमारे पास मत्ती 21 में भी यही दृष्टांत है, और मार्क 11 में भी यही है। लूका का अनुवाद बहुत दिलचस्प है क्योंकि जब फसल आई, तो स्वामी ने देखा कि अंजीर में फल नहीं लग रहा था, और तीन साल बाद, वह बार-बार आया।

उनका तात्पर्य है कि वह पेड़ सज़ा के योग्य है और यीशु के श्रोता जो इस दृष्टांत को सुन रहे हैं, वे इसका उत्तर जानते हैं। उन्होंने पहले ही गलीलियों और पिलातुस के बारे में बात की थी। उन्होंने सिलोम की मीनार वाले 18 लोगों के बारे में बात की थी, जो अपनी उचित सज़ा के योग्य थे।

और फिर वह आता है और कहता है, लगातार तीन साल तक, अंजीर का पेड़ फल नहीं दे रहा था। और वह सुझाव देता है कि न्याय करने का सही तरीका यह है कि इसे काट दिया जाए। ध्यान दें कि लूका ने इस वृत्तांत को किस तरह से विस्तार से बताया है।

ल्यूक का कहना है कि अंजीर का पेड़ सिर्फ़ फल नहीं दे रहा है और लोगों की ज़रूरतों को पूरा नहीं कर रहा है। नहीं, ल्यूक का कहना है कि फल, यानी वह पेड़ जो फल नहीं दे रहा है, वास्तव में मिट्टी को बर्बाद कर रहा है, ज़मीन को बर्बाद कर रहा है, ज़मीन से खाद को बर्बाद कर रहा है। दूसरे शब्दों में, यह स्रोत से संसाधनों के लिए ऊर्जा खींच रहा है और संसाधनों को बर्बाद कर रहा है क्योंकि यह वास्तव में बढ़ने और फल देने में सक्षम होने के लिए सही जगह पर है।

लेकिन इस विशेष दृष्टांत के बारे में लूका के वर्णन में कुछ और भी है। लूका ने कहा कि अंगूर की खेती करने वाला व्यक्ति मालिक को यह कहने के लिए राजी करने में सक्षम था कि, अभी इसे मत काटो। दूसरे शब्दों में, यदि आप यीशु द्वारा पश्चाताप के लिए बुलाए जाने के दृष्टांत को सुन रहे हैं, तो आप इसके लायक हैं। यदि आप अपने तरीके नहीं बदलते हैं, तो आप नाश होने के लायक हैं।

लेकिन अंगूर की खेती करने वाला आया और बोला, अरे नहीं, अभी इसे मत काटो। और मालिक को यह बात समझ में आ गई। उसने कहा, ठीक है, तो फिर हम इसे एक और साल देते हैं।

और इस दूसरे वर्ष में, फल देने का अवसर है। लेकिन अगर ऐसा नहीं होता है, तो न्याय हो सकता है। इस दृष्टांत में, यीशु सबसे स्पष्ट कथन, सबसे स्पष्ट समय में परमेश्वर के राज्य की अभिव्यक्ति को सामने ला रहे हैं।

लोगों को अपने पापों से दूर होकर परमेश्वर के राज्य का संदेश स्वीकार करना चाहिए। कोई भी पेड़ भूमि को बर्बाद करने के लिए खड़ा नहीं छोड़ा जाएगा। यीशु यहाँ एक शक्तिशाली चित्रण प्रस्तुत करते हैं।

आप देखिए, कोई व्यक्ति उम्मीद कर सकता है, कोई व्यक्ति फल से एक चीज़ की उम्मीद कर सकता है, लेकिन अंगूर की खेती करने वाला कहता है, मैं फल लाने के लिए जो कुछ भी करना है, उस पर काम करने के लिए प्रतिबद्ध हूँ। और यदि आप दर्शकों में हैं, तो यीशु जानते हैं कि आप दृष्टांतों से परिचित हैं, इसलिए आप छवियों के साथ सोच रहे हैं। न्याय की प्रत्याशा होने पर अपने तरीके बदलें।

न्याय निश्चित रूप से तब आएगा जब मूल्यांकन का अगला समय आएगा, और फिर हम यहाँ एक और घटना देखते हैं जहाँ अगले अंश में कुछ और आएगा। आराधनालय में कुछ घटित होगा।

एक महिला जो 18 साल से पीड़ित है, सब्त के दिन आराधनालय में आएगी। जैसा कि हमने अध्याय 7 में देखा, इस महिला के बारे में अन्य समकालिक लेखकों ने नहीं बताया है; अगर मुझे सही याद है, तो महिला आती है, और महिला उपचार का अनुभव करती है। हमें बताया गया है कि यीशु ने पुकारा और घोषणा की कि महिला ठीक हो गई है और उसके ऊपर हाथ रखकर उसे दिव्य उपचार प्राप्त हुआ।

जब उसे दिव्य उपचार मिला, तो आराधनालय का शासक परेशान हो गया। ध्यान दें कि आराधनालय का शासक क्या करेगा। आराधनालय का यह शासक अपने आरोपों या बयानों को यीशु पर निर्देशित नहीं करेगा।

वह यीशु के चंगाई से परेशान था, लेकिन उसने भीड़ की ओर मुड़कर कहा, दोस्तों, मैं तुम्हें सब्त के दिन यहाँ नहीं चाहता। काम करने के लिए छह दिन हैं। उन छह दिनों में यहाँ आओ, और तुम इस यीशु आदमी से मिल सकते हो।

वह आपकी सारी चिकित्सा और मुक्ति कर सकता है जिसके बारे में आप सोच रहे हैं। लेकिन वैसे, मैं आपको सब्त के दिन नहीं चाहता क्योंकि सब्त के दिन चंगा होना उसके सब्त के प्रोटोकॉल को बाधित करता है, और यह काम कर रहा है। यह अच्छा नहीं है।

क्या यह दिलचस्प नहीं है? यह कमज़ोरों के प्रति अपनी भावनाओं को व्यक्त करने का एक चतुर तरीका है। यीशु ही वह व्यक्ति है जिसने चंगाई की। लेकिन आप इस वृत्तांत में देखेंगे कि एक महिला के चंगाई से ये सारी चीज़ें घटित होने जा रही हैं।

लेकिन अगर आप यूनानी पाठ को ध्यान से देखें तो यीशु सामने आने वाले हैं। वह आराधनालय के शासक को निर्देश देगा और उसे पाखंडी कहेगा। कुछ अनुवाद कमरे में मौजूद हर व्यक्ति के लिए पाखंड की भाषा का इस्तेमाल करते हैं। लेकिन अगर आप पाठ को ध्यान से देखें तो ऐसा लगता है कि यीशु कह रहे हैं कि आप पाखंडी हैं।

यीशु के अनुसार वह पाखंडी क्यों नहीं है? सबसे पहले, इस तथ्य पर भरोसा करें कि यीशु ही उपचार कर रहा है। आपके पास उपचार के बारे में कोई समस्या है। आप किसके पास जाएँगे? यीशु के पास।

तुम भीड़ के पास क्यों जाते हो? पाखंडी। ऐसा मत करो। अब वह एक और मामले में पाखंडी है, यीशु के अनुसार।

तथ्य यह है कि वह जानता है कि एक यहूदी के रूप में, वे सब्त के दिन अपने पालतू जानवरों को तरोताज़ा करने के लिए छोड़ने के लिए तैयार हैं। लेकिन यीशु ने कहा कि जिस स्त्री का ज़िक्र

किया गया है वह कोई गैर-यहूदी नहीं है। जिस स्त्री का ज़िक्र किया गया है वह अब्राहम की बेटी है।

जिस महिला के बारे में बात हो रही है, वह एक यहूदी महिला है। इस महिला को आज़ाद होने का हक है। इसलिए वह उस आदमी के पास वापस गया और कहा, अपनी खुद की व्याख्या और समझ के अनुसार, कैसे घरेलू जानवरों, यहाँ तक कि जानवरों को भी तरोताज़ा होने के लिए रिहा किया जाना चाहिए।

क्या आपको नहीं लगता कि अब्राहम की बेटी को रिहा किया जाना चाहिए? और यहीं से शैतानी बंधन की चिंता शुरू होती है। यीशु ने उसकी बीमारी के कारण आई उसकी टेढ़ी मुद्रा को यह कहते हुए बदल दिया कि शैतान उसकी इस हालत के लिए जिम्मेदार है। उसने यह भी कहा कि वह इस महिला को रिहा करने के लिए आराधनालय में आया था।

आप देखिए, इसका इस्तेमाल यह बताने के लिए किया जा रहा है कि परमेश्वर के राज्य में क्या चल रहा है, ताकि यीशु अपने काम करने के तरीके से लोगों को चुनौती देते रहें और चुनौती देते रहें कि वे दुनिया को इस तरह से देखें जिससे उनके दिमाग चकरा जाएँ। यहाँ आगे बढ़ने से पहले, मैं इस महिला के राक्षस-ग्रस्त होने के बारे में कुछ स्पष्ट करना चाहता हूँ। जब मैं नेताओं को प्रशिक्षित कर रहा होता हूँ या कभी-कभी कक्षा में होता हूँ, तो चर्च नेतृत्व प्रतियोगिताओं में मुझसे अक्सर पूछा जाता है कि क्या ईसाई या यहूदी राक्षस-ग्रस्त हो सकते हैं? मुझे नहीं पता।

मैं ईश्वर नहीं हूँ। लेकिन मैं बस इतना जानता हूँ कि चाहे इस महिला पर शैतान ने अत्याचार किया हो या किसी न किसी तरह से शैतान ने उसे उलझाया हो, यीशु उसे आज़ाद कर रहे थे जैसा कि उन्होंने नाज़रेथ घोषणापत्र में कहा था कि जीवित ईश्वर की आत्मा उस पर है और वह बंदी को आज़ाद करने आया है। हो सकता है कि महिला पर भूत सवार न हो, लेकिन हो सकता है कि वह शैतान द्वारा प्रताड़ित हो।

मुझे नहीं पता। मैं ईसाई होने के कारण शैतान के अत्याचारों से अछूता नहीं हूँ। ल्यूक हमें बस यही समझाना चाहता है।

यीशु राज्य का काम कर रहे हैं। और हमेशा की तरह, वह सिखाने के लिए आराधनालय में गए, और वहाँ उन्हें यह महिला मिली। यह महिला 18 साल से कष्ट झेल रही थी, और यीशु ने कहा कि उसने शैतान के हाथों कष्ट झेला था।

इससे पहले कि हम यह अनुमान लगाएँ कि और क्या हो रहा है, लूका ने हमें कई बार बताया है कि शैतान परमेश्वर के राज्य का कट्टर दुश्मन है, और राज्य के मिशन का एक हिस्सा शैतान के कामों को नष्ट करना है। अगर मैं 1 यूहन्ना को उद्धृत करूँ, तो इस संबंध में एक पूरी तरह से अलग परीक्षा, जैसा कि यूहन्ना ने यूहन्ना के समय में कहा था, इस कारण से, एक मनुष्य का पुत्र प्रकट हुआ, ताकि वह शैतान के कामों को नष्ट कर सके। मुझे लगता है कि लूका यहाँ यही बात आगे बढ़ाने की कोशिश कर रहा है।

फिर, यीशु दो छवियों का उपयोग करके परमेश्वर के राज्य के प्रभाव और प्रभाव के बारे में बात करेंगे। मुख्य बीज एक बहुत छोटा बीज है जो अंततः एक पेड़ बन सकता है और विशाल हो सकता है। एक छोटे से बीज का प्रभाव।

इसके बाद वह खमीर के प्रभाव के बारे में बात करते हैं। मुझे सबसे पहले यह स्वीकार करना चाहिए कि मुझे खाना बनाना पसंद है, और बेकिंग उन चीजों में से एक है जो मुझे चुनौतीपूर्ण लगती है। मैं आटे के साथ खमीर को सही तरीके से मिलाने में कभी सफल नहीं रहा।

हाल ही में मुझे लगा कि मैं अपने बच्चों के साथ कुछ खोज कर रहा था, और मुझे लगा कि मैंने सूखे खमीर को बिल्कुल सही तरीके से मापा है और यह ठीक वैसे ही काम करेगा जैसा मैं चाहता था, और मैंने इसे ब्रेड मेकर में डाल दिया। मैंने एक मशीन शुरू की। पहला अवलोकन तब हुआ जब मैंने देखा कि ब्रेड मेकर में कुछ भयानक दिख रहा था, और हमें वापस जाना पड़ा।

मुझे थोड़ा और तरल पदार्थ मिलाना पड़ा। यह पहला संकेत था कि मैं इसे सही तरीके से नहीं कर पाया। और फिर मैंने सोचा, ओह, अब सब कुछ ठीक चल रहा है। यह सही होना चाहिए।

और यही वह सबसे करीबी बात थी जिसके बारे में मैं बात कर रहा हूँ, शायद एक हफ्ते पहले या उससे भी कम समय पहले, कि मैं खमीर और खमीर और आटे के अनुपात को सही करने के करीब पहुँच रहा था। लेकिन आप देखिए, यहाँ यीशु जो कर रहे हैं वह दर्शकों को एक महिला की रसोई में ले जाना है, यह जानते हुए कि बहुत से पुरुष दर्शक मेरे जैसे हो सकते हैं जो खाना बनाना और खमीर को सही तरीके से बनाना भी नहीं जानते। लेकिन समझें कि जब सही व्यक्ति यह कर रहा होता है, तो खमीर शक्तिशाली और प्रभावशाली होता है।

यह उन एंजाइमों को पेश करने में सक्षम है जो आटे को संक्रमित करेंगे और आटे को फूला देंगे और उस आकार में बढ़ा देंगे, इससे पहले कि वह हमारी पसंद की रोटी में पके। खमीर के प्रभाव को देखा जाना चाहिए, और मास्टर बीज के प्रभाव को तुलनात्मक शब्दों में या ईश्वर के राज्य के प्रभाव के संबंध में अनुरूप शब्दों में देखा जाना चाहिए। यह बहुत ही महत्वहीन दिखने वाली चीज़ से शुरू होता है और उस चीज़ तक फैलता है जो बहुत, बहुत बड़ी और प्रभावशाली है।

यीशु ने लूका अध्याय 3 में यह आधारशिला रखी ताकि उन्हें याद दिलाया जा सके कि भविष्यवक्ता पश्चाताप के लिए बुला रहा है। हाँ, जब भविष्यवक्ता पश्चाताप के लिए बुलाता है, तो वह लोगों को पाप का विरोध करने के लिए बुलाता है। और जब वह आराधनालय में जाता है, तो उसका मिशन केवल पाप की क्षमा ही नहीं होता; वह उन लोगों को मुक्त करता है जो शैतानी गढ़ में फँसे हुए हैं।

और अगर लोग जानते हैं कि सब्त के दिन अपने पालतू जानवरों को छोड़ना अच्छा है, तो हाँ, मनुष्य का पुत्र उन लोगों को मुक्त करेगा जो शैतान के बंधन में हैं। राज्य एक छोटे से तरीके से शुरू हो रहा है, लेकिन यह एक बड़े तरीके से बढ़ने वाला है, जैसा कि उसकी आखिरी दो कहानियाँ दिखाएँगी। अध्याय 13, श्लोक 22 में, लूका आगे कहता है; वह शहरों और गाँवों से होते हुए यरूशलेम की ओर शिक्षा देता और यात्रा करता हुआ आगे बढ़ा, अभी भी यरूशलेम की ओर अपने रास्ते पर था।

किसी ने उससे पूछा, “हे प्रभु, क्या उद्धार पानेवाले थोड़े ही होंगे?” उसने उनसे कहा, “संकरे द्वारों से प्रवेश करने का प्रयत्न करो। क्योंकि मैं तुमसे कहता हूँ, बहुत से लोग प्रवेश करना चाहेंगे, और न कर सकेंगे।” एक बार घर के स्वामी ने उठकर द्वार बन्द कर दिया।

और तुम बाहर खड़े होकर द्वार खटखटाने लगोगे कि हे प्रभु, हमारे लिए खोल दे। तब वह तुम्हें उत्तर देगा कि मैं नहीं जानता कि तुम कहां से आए हो। तब तुम कहने लगोगे कि हमने तेरे सामने खाया-पीया और तू ने हमारे सड़कों में उपदेश किया।

परन्तु वह कहेगा, मैं तुम से कहता हूँ, मैं नहीं जानता तुम कहां से आते हो। हे कुकर्म करनेवालो, मेरे पास से चले जाओ। उस जगह रोना और दांत पीसना होगा।

जब तुम अब्राहम और इसहाक और याकूब और परमेश्वर के राज्य के सभी भविष्यद्वक्ताओं को देखोगे, लेकिन तुम खुद को बाहर निकाल दोगे, तो लोग पूर्व और पश्चिम और उत्तर और दक्षिण से आएंगे और परमेश्वर के राज्य में एक मेज पर बैठेंगे। और देखो, कुछ अंतिम हैं, और कुछ पहले होंगे, और कुछ अंतिम होंगे। यहाँ यीशु की एक परिचित शिक्षा है जैसा कि हमने उनकी शिक्षाओं में कहीं और देखा, विशेष रूप से लूका में नहीं।

तो, मैं यहाँ जो करने जा रहा हूँ, वह आपको उन चीज़ों की कुछ बुनियादी रूपरेखा से परिचित कराना है, जिन्हें यीशु यहाँ इस राज्य के संबंध में चल रही चीज़ों के बारे में बता रहे हैं। सबसे पहले, उद्धार के सवाल पर। यीशु यह वैचारिक परिवर्तन करते हैं, ल्यूक यह वैचारिक परिवर्तन करते हैं, माफ़ कीजिए, सरसों के बीज और खमीर से लेकर रूपक तक।

यदि कुछ लोग कुछ बदलाव ला रहे हैं और महत्वपूर्ण बदलाव ला सकते हैं, तो यह लगभग इस प्रश्न की ओर ले जाता है कि क्या केवल कुछ ही लोग बचाए गए हैं? ध्यान दें कि लूका चाहता है कि आप इस बात से अवगत रहें कि यीशु अभी भी गलील से यरूशलेम की यात्रा पर है। इसलिए, वह यह सुनिश्चित करना चाहता है कि आप इस कथा में इसे बहुत अच्छी तरह से समझ लें क्योंकि वह आगे बढ़ता है। इस अंश में ध्यान देने वाली दूसरी बात प्रत्याशित उद्धार का प्रश्न है।

प्रश्न से ऐसा लगता है कि शायद यह प्रश्नकर्ता या प्रश्न पूछने वाला व्यक्ति यहूदियों के बचे हुए लोगों की सीमा या आकार जानने में रुचि रखता है जिन्हें परमेश्वर के राज्य में प्रवेश की अनुमति दी जा सकती है। लेकिन ध्यान दें कि यीशु दृष्टांत के साथ कैसे समझाते हैं। वह एक बहुत बड़े घर के स्थान पर दृश्य प्रस्तुत करता है, जिसमें एक संकीर्ण द्वार का उपयोग किया जाता है, दूर नहीं।

राजमार्ग के बजाय, कहीं और, मुझे लगता है कि मैथ्यू में, आप यहाँ एक संपत्ति में प्रवेश द्वार देखते हैं। और उस द्वार में, आपके पास एक संकीर्ण द्वार है जो घर में ले जाएगा। लेकिन जैसा कि यीशु ने समझाया, घर का मालिक ही प्रवेश की शर्तें निर्धारित करता है।

हम जानते हैं कि यहूदी हमेशा यहूदी धर्म के दूसरे मंदिर में मसीहा के साथ अंतिम भोज के बारे में बात करते रहे हैं। लेकिन यहाँ निमंत्रण इसके लायक नहीं है। निमंत्रण इसलिए है ताकि कोई

इसमें भाग ले सके, लेकिन यह उन लोगों के लिए समय के प्रति संवेदनशील है जो भाग लेने के लिए तैयार हैं।

यहाँ पर युगांत संबंधी कल्पना या अंत समय की कल्पना योग्य नहीं है। यीशु इस दृष्टांत में सुझाव दे रहे हैं कि जो लोग उनकी बात सुन रहे हैं, वे भी युगांत में एक ऐसी जगह पर आएँगे, जहाँ उन्हें अब्राहम, इसहाक और याकूब को परमेश्वर के राज्य में देखने की दृश्य पहुँच होगी, लेकिन वे उन्हें देख नहीं पाएँगे। मुझसे मत पूछिए कि स्वर्ग और नरक के बारे में इसका क्या मतलब है।

मुझे नहीं पता कि इसका क्या मतलब है, लेकिन यीशु की छवि उन्हें इस तथ्य की समझ के करीब लाना है कि परमानंद की अंतिम अवस्था में, आपके पास अब्राहम, इसहाक और याकूब और अन्य लोग होंगे, और जो लोग भविष्यवाणी के शब्दों को नहीं सुनेंगे वे प्रवेश नहीं कर पाएँगे। वह इसे स्पष्ट करना चाहता है। उस आधार पर, वह उन्हें राज्य की शिक्षाओं का जवाब देने के लिए चुनौती दे सकता है।

उस अंश से उजागर करने वाली एक और बात यह है कि यीशु ने इस तथ्य को कैसे उजागर किया कि जो लोग उसके साथ संगति का दावा करते हैं, उन्हें अभी भी अंतिम समय में जगह नहीं मिलेगी। यहाँ तक कि जो लोग उसके साथ भोजन करते हैं, अगर उसके साथ कुछ फरीसी थे, या जो लोग उसके साथ यात्रा कर रहे हैं, जो लोग उसके साथ भोजन कर सकते थे अगर वे राज्य के संदेश पर ध्यान नहीं देते हैं, तो उन्हें परमेश्वर के राज्य में जगह नहीं मिलेगी। उन्हें इसका पछतावा होगा।

क्योंकि जब वे अपने पूर्वजों को देखेंगे, तो वे वहाँ होने की इच्छा करेंगे और ऐसा करने में सक्षम नहीं होंगे। पृष्ठभूमि में गूँजने वाली कल्पना पर ध्यान दें। जब यीशु ने कहा कि वह विभाजन लाने आया है, जहाँ पिता और पुत्र भी विभाजित हो जाएँगे, पति और पत्नी, यदि वे राज्य को प्राथमिकता नहीं देते हैं।

इस बातचीत से और एक भविष्यवक्ता के रूप में राज्य के स्वर को स्थापित करते हुए, यीशु हेरोदेस के साथ एक घटना पर बात करते हैं, यरूशलेम के बारे में बात करते हैं, और यरूशलेम ने परमेश्वर के भविष्यवक्ताओं के साथ क्या किया है। इस बात पर प्रकाश डालते हुए कि हाँ, अपने भविष्यवक्ता मंत्रालय में, उन्हें पश्चाताप करने के लिए बुलाते हुए और उन्हें राज्य में भाग लेने के लिए आमंत्रित करते हुए, वह समझते हैं कि यरूशलेम परमेश्वर के लोगों के साथ व्यवहार करने में निर्दोष नहीं रहा है, और फिर भी, वह आया है और यरूशलेम के कल्याण, भलाई में बहुत रुचि रखता है। मैंने 31 से पढ़ा।

उसी समय कुछ फरीसी उसके पास आए और उससे कहा, “यहाँ से चले जाओ। वे उससे और उसकी शिक्षा से तंग आ चुके हैं। क्योंकि हेरोदेस तुम्हें मार डालना चाहता है।”

देखिए, यहाँ इस पंक्ति को न भूलें। फरीसी यहाँ यीशु को चले जाने के लिए कहने आए थे। कुछ मामलों में, उन्हें वह पसंद नहीं आया जो वह सिखा रहा था, लेकिन यहाँ वे कहते हैं, हम तुम्हें बचाना चाहते हैं।

हेरोदेस तुम्हें मारना चाहता है। मैं इस बारे में थोड़ा विस्तार से बताऊंगा कि कुछ विद्वान क्या कहते हैं। कुछ लोग सोचते हैं कि यह कोई वास्तविक आह्वान नहीं है।

मेरे जैसे कुछ लोगों को लगता है कि यीशु से बचने के लिए कहने का यह एक वास्तविक तरीका है। उसने उनसे कहा, जाओ और उस लोमड़ी से कहो, हेरोदेस का जिक्र करते हुए, कि देखो, मैं आज और कल दुष्टात्माओं को निकालता हूँ और हत्याएँ करता हूँ, और तीसरे दिन अपना काम पूरा करता हूँ। फिर भी, मुझे आज, कल और परसों अपने रास्ते पर जाना होगा, क्योंकि ऐसा नहीं हो सकता कि एक भविष्यवक्ता यरूशलेम से दूर मर जाए।

हे यरूशलेम, हे यरूशलेम, हे यरूशलेम! यह नगर भविष्यवक्ताओं को मार डालता है, और अपने पास भेजे हुए लोगों को पत्थरवाह करता है। कितनी बार मैं ने तेरे बच्चों को ऐसे इकट्ठा करना चाहा, जैसे मुर्गी अपने बच्चों को अपने पंखों के नीचे इकट्ठा करती है, पर तू ने ऐसा न किया। देख, तेरा घर त्याग दिया गया है।

और मैं तुमसे कहता हूँ, तुम मुझे तब तक नहीं देखोगे जब तक तुम यह न कहो, धन्य है वह जो प्रभु के नाम से आता है। पाँच मुख्य बातें जो मैं यहाँ जल्दी से उजागर करना चाहता हूँ। कुछ फरीसी आए और यीशु को हेरोदेस की हत्या की साजिश के बारे में बताया।

यहाँ, मैं आपका ध्यान इस तथ्य की ओर आकर्षित करता हूँ कि कुछ विद्वानों ने सुझाव दिया है कि फरीसियों को यीशु में वास्तविक और सच्ची दिलचस्पी नहीं है। हेरोदेस की साजिश के बारे में उसे बताने के लिए आना यीशु की सेवकाई को विफल करने का एक और तरीका था, उसे उस क्षेत्र से दूर जाने के लिए कहना क्योंकि वे उसके बारे में बहुत असहज थे। कुछ विद्वानों ने यह भी सुझाव दिया है कि नहीं, ये फरीसी सच्चे थे।

आप ध्यान दें कि लूका में यहाँ अभिव्यक्ति अद्वितीय है। लूका ने इस विवरण में फरीसियों का उल्लेख नहीं किया। यहाँ, उसने कुछ फरीसियों का उल्लेख किया, जिससे ऐसा प्रतीत होता है कि ये फरीसी वास्तव में यीशु से बच निकलने के लिए सद्भावनापूर्वक आए थे, क्योंकि वे जानते थे कि हेरोदेस उसे मारने की साजिश रच रहा था।

जब आप अलग-अलग टिप्पणियों और पुस्तकों को पढ़ेंगे और उनका अनुसरण करेंगे, तो आपको दूसरा दृष्टिकोण भी मिल सकता है। लेकिन मैं इस दृष्टिकोण के साथ काम करता हूँ कि फरीसियों ने यहाँ यीशु के जीवन के हित को दांव पर लगा दिया था। यीशु ने उन्हें जाने का आदेश दिया।

लेकिन हेरोदेस के संदर्भ में यीशु ने जिस भाषा का प्रयोग किया, उसे देखिए। वह उसे लोमड़ी कहता है। वह हेरोदेस को लोमड़ी कहता है।

एक लोमड़ी जो अपने अधिकार का प्रयोग कर रही है। वह चाहता है कि वे जानें, या वह चाहता है कि वे हेरोदेस को बताएं कि वह एक लोमड़ी है। लेकिन उसे सूचित किया जाना चाहिए कि वह, यीशु, यहीं अधिकार का प्रयोग कर रहा है।

वह दुष्टात्माओं को निकाल रहा है। उसके अधिकार का इस्तेमाल उन तरीकों से किया जाता है। हेरोदेस जो चाहे कर सकता है, लेकिन यीशु जानता है कि यरूशलेम भविष्यद्वक्ताओं के साथ क्या करता है।

और वह इसी उद्देश्य से यरूशलेम जा रहा है। उसे मौत का डर नहीं है। यरूशलेम वह शहर है जो भविष्यद्वक्ताओं को मारता है।

हाँ, यीशु वहाँ जा रहे हैं। लूका ने अध्याय 13 में कहा है कि यीशु यरूशलेम की यात्रा पर हैं, और वे अपने पाठकों को याद दिलाना चाहते हैं कि हाँ, यरूशलेम एक ऐसी जगह है जहाँ भविष्यद्वक्ताओं की मृत्यु होती है, और वे वहाँ जा रहे हैं और उन्हें डर नहीं है। वे वही कर रहे हैं जो भविष्यद्वक्ता करते हैं।

वह परमेश्वर के राज्य की घोषणा कर रहा है और उन सभी को आमंत्रित कर रहा है जो सुनना चाहते हैं कि वे आएँ और भाग लें। हालाँकि वह यरूशलेम के बारे में चिंतित है। वह यरूशलेम के बारे में चिंतित है जैसे एक मुर्गी अपने चूज़ों की देखभाल करती है।

वह यरूशलेम के लिए दुखी है क्योंकि यरूशलेम एक ऐसी जगह है जहाँ अच्छी चीज़ें हो सकती हैं। लेकिन लोगों ने स्वीकार नहीं किया और पहचाना नहीं कि परमेश्वर अपने लोगों के बीच क्या करना चाहता है। यीशु यरूशलेम की ओर बढ़ रहा है।

ओह, वह कितना चाहता है कि परमेश्वर के लोग परमेश्वर के उस भविष्यद्वक्ता को समझें जो आया था। दर्शकों के लिए यह सवाल सस्पेंस में है: क्या यरूशलेम अपने भविष्यद्वक्ता यीशु को मार देगा, या यरूशलेम भविष्यद्वक्ता का स्वागत करेगा और भजन 118 26 के साथ जुड़ेगा और कहेगा, धन्य है वह जो प्रभु के नाम से आया है? यीशु समझते हैं कि लूका के सुसमाचार के अध्याय 12 और अध्याय 13 के बीच, पहाड़ी उपदेश में जो संदेश अलग-अलग तरीकों से प्रस्तुत किया गया था, उसे लोगों के लिए सुनना बहुत मुश्किल है।

उसे इसके लिए कष्ट उठाना पड़ सकता है। लेकिन यीशु की भविष्यसूचक सेवकाई तब तक समाप्त नहीं होगी जब तक वह लोगों को पश्चाताप करने के लिए नहीं बुलाता और जब तक वह उन्हें परमेश्वर के राज्य के दायरे के बारे में नहीं समझाता। कभी-कभी वह लोगों को भड़काता है जब वह हेरोदेस फॉक्स जैसे लोगों को बुलाता है, जब वह यरूशलेम का नाम लेता है और यरूशलेम में रहने वाले लोगों पर परमेश्वर के भविष्यद्वक्ताओं को मारने का ऐतिहासिक उदाहरण होने का आरोप लगाता है।

और फिर भी वह ऐसा अनजाने में नहीं करता। वह यह दिखाने के लिए करता है कि परमेश्वर के राज्य का संदेश लोगों की सभी जानकारी का खंडन कर रहा है। यह हेरोदेस की इच्छाओं का खंडन कर रहा है।

यह यहूदी राजधानी में परमेश्वर के लोगों की इच्छाओं का विरोध कर रहा है कि यहूदी प्रतिष्ठान स्वयं, उसके अपने लोग, राज्य की प्रकृति को नहीं समझेंगे। लेकिन आप देखते हैं कि परमेश्वर का राज्य पश्चाताप और एक अच्छे तरीके, एक नए तरीके से जीने की मांग करता है। जो लोग

ध्यान देंगे, उन्हें अपने पूर्वजों, अब्राहम, इसहाक और याकूब के साथ भोजन करने, जश्न मनाने और दावत करने का लाभ मिलेगा।

ध्यान दें कि लूका यह सुनिश्चित करना चाहता है कि कोई व्यक्ति यीशु की सेवकाई को दूसरे मंदिर यहूदी धर्म के प्रकाश में समझे। ईसाई धर्म यहूदी धर्म से अलग नहीं है। जो लोग परमेश्वर के राज्य पर ध्यान देते हैं, वे यहूदियों के पिताओं, यहूदियों के कुलपिताओं के साथ संगति का आनंद लेंगे।

आप जानते हैं, जैसा कि आप इन व्याख्यानों का अनुसरण करते हैं, मुझे नहीं पता कि आपने पिछले दो व्याख्यानों और इस एक के साथ अब तक कैसा महसूस किया है। क्योंकि यीशु इन अंशों में परमेश्वर के राज्य के बारे में कुछ कठोर, मजबूत कथन देते हैं। लेकिन क्या वह इसीलिए नहीं आया? वह प्रेम करने आया था।

और कभी-कभी प्रेम की आवश्यकता होती है कि पापियों को पश्चाताप के लिए बुलाया जाए। कभी-कभी, प्रेम की आवश्यकता होती है कि जो लोग गलत कामों में अत्यधिक लिप्त हैं, उन्हें बुलाया जाए ताकि वे अपने तरीके बदल सकें। हालाँकि, चीजों के दूसरे पहलू को भी देखें।

जब लोग परमेश्वर की अपेक्षाओं से विमुख हो जाते हैं और उससे दूर चले जाते हैं, तो हम परमेश्वर की दुनिया को चोट पहुँचाते हैं, और हम जीवन की परिस्थितियों और मन की स्थिति के कारण परमेश्वर के लोगों को चोट पहुँचाते हैं। मैं प्रार्थना करता हूँ कि जब हम ये व्याख्यान जारी रखें, तो आप कभी हार न मानें, यह समझते हुए कि इसके मूल में आपके और मेरे लिए परमेश्वर का प्रेम है। और हम गैर-यहूदियों के लिए भी एक विस्तारित निमंत्रण है कि हम आँ और परमेश्वर के राज्य में भाग लें।

क्या हम पश्चाताप करने के लिए भविष्यवक्ता के आह्वान पर ध्यान देंगे और इसलिए आकर राज्य की आशीषों में भाग लेंगे? मैं इसका हिस्सा बनना चाहता हूँ। मुझे उम्मीद है कि आप होंगे। परमेश्वर हमें राज्य के संदेश के प्रति समर्पित होने के दौरान मजबूत बने रहने में मदद करे ताकि परमेश्वर हमसे जो चाहता है, उसकी समग्रता में, संघर्षरत और संघर्षरत मसीहियों के रूप में भी, हम उसके नाम के लिए वफादार बने रहने की कोशिश करेंगे।

सुनने के लिए फिर से धन्यवाद, और मैं प्रार्थना करता हूँ कि आपने इस श्रृंखला से कुछ सीखा हो। श्रृंखला जारी रखें क्योंकि आप इस प्रक्रिया में यीशु के कोमल हृदय को सुनेंगे, कि कैसे वह बहिष्कृत और गरीबों के लिए आया, और कैसे वह हाशिए पर पड़े लोगों के लिए आया। परमेश्वर का राज्य एक पैकेज है।

कृपया इसे न छोड़ें। इस व्याख्यान श्रृंखला को जारी रखें, और मुझे पता है कि आप धन्य होंगे। भगवान आपका भला करे।

यह डॉ. डैनियल के. डार्को द्वारा लूका के सुसमाचार पर दी गई शिक्षा है। यह सत्र संख्या 22 है, पश्चाताप के लिए भविष्यवाणी का आह्वान। लूका अध्याय 13।